तिथि
20.4.2020 Topic SL. No. 46

स्नातक प्रथम वर्ष
हिन्दी (प्रतिष्ठा)
B.A Hindi (Hons.)
D 1.
पत्र - द्वितीय - II

रसखान : सामान्य परिचय

जीवन वृत्त: (जन्म - १६०१४ वि० - मृत्यु १६८० वि०)

रसिक 'रसखान' का कृष्ण भक्त कवियों में प्रमुख स्थान है। ये जाति के पठान थे और इनका नाम सय्यद इब्राहिम था। इनके जीवनवृत्त के संबंध में पर्याप्त सामग्री 'चौरासी वैष्णवन की वार्ता' से प्राप्त होती है। रसखान प्रेमी स्वभाव के थे और उनका लौकिक प्रेम ही भक्तिभाव में परिणत हो गया था। भगवद्- भक्ति के लिए अपना सब कुछ छोड़कर वे ब्रजभूमि में जाकर रहने लगे। विट्ठलनाथ के शिष्य हो गये।

रचनाएँ

रसखान कृत दो पुस्तकों का उल्लेख मिलता है, वे दोनों पुस्तकें हैं - 'प्रेमवाटिका' और 'सुजान रसखान'। 'प्रेमवाटिका' में उनकी प्रेम संबंधी कविताएँ संगृहीत हैं और इसकी रचना दोहा छंद में है।

'सुजान रसखान' में कृष्ण संबंधी कविताएँ हैं। इस कृति के विषय हैं - कृष्ण, गोपिकाएँ, मुरली, गोचारण, ब्रजभूमि आदि। इसमें कवित्त तथा सवैया का प्रयोग है।

Scanned with CamScanner

भाव पक्ष :

रसखान की कविताओं को दो श्रेणियों में बाँटा जा सकता है – 1) प्रेम संबंधी पद, (2) कृष्ण भक्ति संबंधी पद। वे प्रेम के क्षेत्र में स्वार्थ भाव को नहीं देखना चाहते थे। प्रेम को प्राप्त करने के बाद बैकुण्ठ और भगवान की चाह भी व्यर्थ हो जाती है। ~~शुद्ध प्रेम के~~ ~~स्वरूप~~ का भक्ति की ओर मुड़ने के बाद वे लौकिक-प्रेम को छोड़कर अलौकिक प्रेम की महत्ता बतलाने लगे। उन्हें तभी विषयानंद की अपेक्षा ब्रह्मानंद श्रेष्ठ लगा और वे इस श्रेष्ठता को सिद्ध करते हुए कह उठे-

“ कै वे विषयानंद कै ब्रह्मानंद बखान।”

भक्ति भावना :

रसखान कृष्ण भक्त कवि थे। उन्होंने विट्ठलनाथजी से दीक्षा ली थी, अतः उनकी भक्ति सखा-भाव की थी। जिस युग में उन्होंने साहित्य-रचना आरंभ की, वह युग हिन्दी का स्वर्ण-युग था। उस समय तक तुलसी और सूर की भक्ति विषयक कविताएँ सामने आ चुकी थीं। सूफी मत का भी प्रभाव लोगों पर पड़ चुका था। रसखान भी प्रेमभाव से प्रभावित होने के कारण लीला-पुरुषोत्तम कृष्ण की ही भक्ति में लगे। उन्होंने कृष्ण की रूप-माधुरी को अत्यंत सुंदर ढंग से

वर्णन किया। कृष्ण भक्त कवियों ने कृष्ण के बाल रूप और उनके प्रेम भाव का अधिक वर्णन किया है। रसखान को भी ये दो रूप ही प्रिय रहे। बालकृष्ण का वर्णन करते हुए उन्होंने कहा -

"चूरि भरे अति सोभित स्याम जू
तैसी बनी सिर सुंदर चोटी।
खेलत खात फिरैं अंगना,
पग पैंजनी बाजती पीरी कछोटी।"

उन्होंने कृष्ण को अहीर की छोरियों के इशारे पर नाचते देखा है और राधा के पाँव पर लोटते पाया है

वे नंद की गाय चराने के लिए आहीर सिद्धियों और नव निधियों तक को न्योछावर करने में भी प्रसन्नता का अनुभव करते थे। वे 'आँखिन सों' ब्रज-बाग को निहारना चाहते थे। हरि के हाथ से रोटी लेकर उड़ जानेवाले काग के भाग की भी सराहना उन्होंने की है। रूप की ओर आकर्षण होने के कारण उनकी कविता में वियोग-शृंगार का कम दर्शन होता है। उनकी भक्ति अनूठी थी।

कला-पक्ष :

छंद-विधान की दृष्टि से रसखान के भावों की अभिव्यक्ति मुख्यत: दोहा, कवित्त और सवैया

Scanned with CamScanner

पदों के द्वारा हुई है। इन पदों में उन्होंने मुख्यतः शृंगार, वात्सल्य और शांत रसों को पुष्ट किया है। कृष्ण - गोपी लीला के पद शृंगार-भाव पूर्ण हैं। बाल-कृष्ण से संबंधित पदों में वात्सल्य-भाव का दर्शन होता है। कवि की ब्रज-भूमि और कृष्ण-भक्ति से संबंधित अभिलाषाएँ शांत रस का परिचय देती हैं।

भाषा की दृष्टि से उनकी कविताओं का माध्यम ब्रजभाषा थी। उसमें किसी तरह की कृत्रिमता नहीं है, वह स्वाभाविक प्रवाह से युक्त है। अरबी, फारसी और अवधी के प्रचलित शब्दों का चयन कर उन्हें ब्रज भाषा के बीच सुंदर ढंग से सजाने का कार्य रसखान ने बड़ी कुशलतापूर्वक किया है। कहीं-कहीं उनके पदों में राजस्थानी और अपभ्रंश के शब्द भी मिलते हैं। उनकी कविता में माधुर्य तथा प्रसाद गुणों का दर्शन होता है। शब्द-चयन, स्वाभाविक प्रवाह आदि गुणों के कारण उनके सवैयों में गेय-तत्व मुखर हो उठा है।

अन्य अलंकारों का बड़ा ही स्वाभाविक प्रयोग उनकी रचनाओं में मिलता है। उनके प्रिय अलंकार थे - अनुप्रास, रूपक, उपमा, श्लेष, यमक, उत्प्रेक्षा आदि।

मुसलमान होते हुए भी रसखान कृष्ण की भक्ति में जिस प्रकार तल्लीन हुए, वह उनकी

Scanned with CamScanner

भक्तिभावना का परिचायक है। प्रेम की जैसी तन्मयता और उक्ति की जैसी चातुरी उनकी रचनाओं में देखने को मिलती है, वैसी अन्य कवियों में कम मिलती है। परवर्ती कवि घनानंद और भारतेन्दु हरिश्चन्द्र पर उनका प्रभाव पड़ा।

अस्तु रसखान की कविता के भावपक्ष और कलापक्ष दोनों पर विचार कर लेने के बाद यह निःसंकोच भाव से कहा जा सकता है कि उनकी अनुभूति तीव्र थी और अभिव्यक्ति प्रबल थी। वे कृष्ण-भक्त कवियों में विशिष्ट स्थान के अधिकारी हैं। और हिन्दी जगत उनके काव्य-माधुर्य के लिए उनके प्रति आभारी है।

— डा० आरती प्रसाद
सह प्राचार्य
हिन्दी - विभाग
दास नारायण महाविद्यालय
पण्डौल, मधुबनी
मो. नं० - 9155839898

Scanned with CamScanner